(लघु कहानी)
जो चुप रहकर इतिहास लिख गई

कोईगावाँ नाम का वह गाँव मानचित्र पर कही खास नही था, लेकिन उसकी सामाजिक बनावट भारतीय ग्रामीण समाज की सच्ची तस्वीर थी। वहाँ, खेत, कुएँ, नदी और मंदिर था, पंचायत भवन था पर सबसे अधिक थी परम्पराओं की जकड़न। पीढ़ियों से एक ही सोच चलती आ रही थी कि पुरूष निर्णय लेंगे और स्त्रियाँ उन्हें नियाएँगी। नारी को घर की मर्यादा कहा जाता था, पर उसकी सीमाएँ वही चार दीवारें तय करती थी। इसी कोईरगाँवा में निर्मला का जन्म हुआ। उसका जन्म किसी उत्सव की तरह नही मनाया गया। घर में बस इतना कहा गया-चलो बेटी ही सही। पर यही बेटी आगे चलकर उस गाँव की सोच की नीव हिला देगी इसका अनुमान किसी को नही था। निर्मला बचपन से ही चुप रहने वाली लड़की थी, लेकिन उसकी चुप्पी खाली नही थी। उसकी आँखें हर चीज में काम करते किसानों को पानी के लिए जुझती औरतों को और पंचायत में बैठे पुरुषों को जो फैसले सुनाते थे। वह सवाल पुछती थी, पर जोर से नही। वह सीखती थी, पर दिखावे के लिए नही। उसके पिता किसान थे-मेहनती, ईमानदार, पर समाज की बेड़ियों से बाँधे हुए। वे बेटी की बुद्धि को पहचानते थे, लेकिन गाँव के डर से खुलकर स्वीकर नही कर पाते थे। माँ, जो खुद पाँचवी के बाद पढ़ नही पायी थी, निर्मला की सबसे बड़ी ताकत थी। वह ज्यादा नही बोलती थी पर जब भी बेटी की पढ़ाई पर सवाल उठता, वह चुपचाप खड़ी हो जाती थी कि उसका खड़ा रहना ही उसके लिए विरोध था।

निर्मला की शुरूआती पढ़ाई गाँव के स्कूल में हुई। वहाँ लड़के को आगे बैठाया जाता था, और लड़कियाँ पीछे बैठती थी। शिक्षक भी सवाल लड़को से ही पुछते थे। निर्मला सब समझती थी, लेकिन धीरे-धीरे वह जानती थी कि समय आएगा जब उसे बोलना होगा। आठवी कक्षा के बाद उसकी पढ़ाई पर संकट आ गया। गाँव में लड़कियों को आगे पढ़ाने की परम्परा नही थी। पंचायत में चर्चा हुई- "लड़की है ज्यादा पढ़कर क्या करेगी ? उसी दिन पहली बार निर्मला ने अपनी पिता की आँखों में असहायता देखी। माँ ने उस रात कुछ नही कहा बस अगली सुबह अपने गहने निकालकर पिता के हाथ में रख दिए। उस मौन निर्णय ने निर्मला का भविष्य खोल दिया। कॉलेज के लिए शहर जाना उसके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ था। वह उस गाँव की पहली लड़की थी जो शहर में पढ़ रही थी। शहर ने उसे नई दुनिया दिखाई वहाँ उसने सिर्फ किताबें नही पढ़ी, बल्कि लोगों को पढ़ना सीखा। उसने जाना कि संविधान में नारी को समान अधिकार मिले है, लेकिन समाज में अभी भी उसे साबित करना पड़ता है।

उसने महसूस किया कि बदलाव भाषणों से नही निरंतर प्रयास से आता है। शहर में रहते हुए निर्मला ने कई बार सोचा-क्या उसे वही नौकरी कर लेनी चाहिए ? जीवन आसान होता और सम्मान मिलता। लेकिन हर बार उसे अपनी गाँव कोईरगाँवा की गलियाँ याद आती, वह स्कूल, वह पीछे बैठी लड़कियाँ। उसने तय कर लिया था कि वह अपने गाँव लौटेगी। निर्मला ने अपनी पढ़ाई पुरी कर गाँव लौट आई। लोगों को यह अजीब निर्णय लगा। कुछ ने कहा-"इतनी पढ़ी-लिखी होकर यहाँ क्या करेगी ? कुछ लोगों ने कहा कि शहर में नौकरी कर लेती। निर्मला ने मुस्कुराकर कहा- "क्योंकि परिवर्तन बाहर से नही भीतर से आता है।"

निर्मला ने अपने गाँव के ही स्कूल में शिक्षिका के रूप में काम शुरू कर दिया। पहले दिन जब वह कक्षा में खड़ी हुई, तो उसे लगा जैसे वह अपना ही बचपन देख रही है। लड़कियाँ चुप थी, आँखें झुकी हुई। उसने पढ़ाना शुरू किया, लेकिन केवल किताब का पाठ नही। उसने उनसे सवाल पुछे, उनकी राय माँगी। शुरू में कोई नही बोला, फिर एक दिन एक लड़की ने धीरे से हाथ उठाया। उस छोटे से हाथ उठने में वर्षो की चुप्पी टूटी थी। धीरे-धीरे बदलाव दिखने लगा। लड़कियाँ आगे बैठने लगी, सवाल पुछने लगी। यह बदलाव कुछ लोगों को खटकने लगा। पंचायत में बातें होने लगी-"लड़कियों को ज्यादा सिर पर चढ़ाया जा रहा है।" निर्मला ने सुना पर प्रतिक्रिया नही दी।

फिर वह साल आया, जब बारिश नही हुई। खेत सुखने लगे, किसान परेशान हो गए। पंचायत की बैठक हुई पर कोई समाधान नही निकला। निर्मला पीछे बैठी सब सुन रही थी। अचानक उसने हाथ उठाया। पुरे पंचायत भवन में सन्नाटा छा गया। किसी स्त्री का यूँ बोलना असामान्य था। उसने शांत स्वर में कहा- "अगर अनुमति हो तो मैं कुछ कहूँ ?" कुछ लोग हँसें, कुछ लोग नाराज हुएँ, फिर सरपंच ने हाथ उठाकर बोलने दिया। निर्मला ने जल-सरंक्षण, फसल चक्र और वैकल्पित खेती के बारे में समझाया। यह सब उसने अपनी पढ़ायी और अनुभव से सीखा था। लोग हँसे, पर हालात ने उन्हे सोचने पर मजबूर कर दिया। निर्मला के सुक्षावों को अपनाने वाले किसानो की फसल अपेक्षा से बेहतर हुई। जहाँ आस-पास के खेत सूखे और बेजान पड़े थे, वहाँ हरियाली दिखाई देने लगी। यह बदलाव छोटा था, लेकिन प्रभावशाली। अब लोग पंचायत में केवल शिकायतें नही, समाधान भी खोजने लगे थे, और पहली बार समाधान किसी स्त्री से आया था। फिर भी यह स्वीकार करना सबके लिए आसान नही था। कुछ लोग मन-ही-मन असहज थे। उन्हें लगने लगा था कि अगर स्त्रियाँ ऐसे ही बालेने लगी, तो सदियों से चली आ रही परम्परा बदल जाएगी। पंचायत के कुछ सदस्यों ने यह कहना शुरू कर दिया कि निर्मला गाँव की शांति भंग कर रही है। निर्मला को यह सब पता था, पर उसने कोई प्रतिक्रिया नही दी। वह जानती थी कि असली लड़ाई शब्दों से नही, धैर्य से जीती जाती है।

उसने स्कूल के बाद गाँव की महिलाओं के साथ बैठना शुरू किया। पहले वे झिझकती थी। अपने दुःख कहने में डरती थी, लेकिन धीरे-धीरे उनके भीतर वर्षो से दबा आत्मविश्वास बाहर आने लगा। निर्मला ने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया, सरकारी योजनाओं की जानकारी दी और सबसे जरूरी बात अपने अधिकार पहचानने का साहस दिया। वह उनसे कहती तुम्हारी चुप्पी कमजोरी नही है पर जब जरूरी हो तब बोलना भी सीखों।

कुछ महीनों में ही कोईरगाँवा की तस्वीर बदलने लगी। लड़कियाँ स्कूल छोड़ने के बजाय आगे की पढ़ाई की बातें करने लगी। महिलाओं ने पंचायत में बैठने की माँग रखी। यह माँग किसी नारे के साथ नही आयी थी, बल्कि आत्मविश्वास के साथ आई थी। यही बात कुछ लोगों को सबसे ज्यादा डराने लगी। एक दिन पंचायत की विशेष बैठक बुलाई गई कोई भी टॉपिक नही था, लेकिन वातावरण भारी था। अतंतः प्रस्ताव रखा गया कि गाँव की शांति और परम्परा बनाए रखने के लिए निर्मला को कोईरगावाँ छोड़ देना चाहिए। यह बात उसके लिए बिजली गिरने से कम नही थी। उस रात निर्मला पहली बार टूट गई। उसने माँ की गोद में सिर रखकर रोते हुए कहा- "क्या मैंने गलती की, माँ" माँ ने उसका सिर सहलाया और बोली- गलती वह नही होती जिससे लोग डरें। गलती तो वह होती है जिससे लोग जागे और फिर भी कुछ न करें।

माँ की इतनी बात सुनकर निर्मला को आत्मविश्वास हुआ और उसने अगले दिन गाँव की अंतिम सभा बुलाने की बात कही। लोग हैरान थे, पर आए। वह मंच पर नही चढ़ी, वह सबके बीच खड़ी हुई-बिना उँची आवाज बिना आरोप के उसने कहा मैं यहाँ किसी की परम्परा तोड़ने नही आई थी। मैं बस यह दिखाना चाहती थी कि नारी बोझ नही शक्ति है। अगर मेरी वहज से आपको डर लगा तो शायद बदलाव शुरू हो चुका है। मैं कही नही जाना चाहती लेकिन अगर मेरा रहना आपको असहज करता है तो मैं चुपचाप चली जाउगी उसकी। बातों में न आक्रोश था न चुनौती बस सच्चाई थी।

सभा के बाद गाँव में अजीब शांति थी। कोई निर्णय तुरंत नही हुआ। लेकिन उसी सप्ताह जिला प्रशाासन की एक टीम गाँव पहुँची। उन्होंने खेती में हुए सुधार, महिलाओं के समूह और शिक्षा में बदलाव को देखा। निर्मला के कार्यो की सरहना हुई और उसे सम्मानित किया गया। अब पंचायत में चुप रहने के अलावा कोई रास्ता नही था। समय बीतता गया। निर्मला कही नही गई वह उसी स्कूल में पढ़ाती रही उसी मिट्टी में काम करती रही। फर्क बस इतना था कि अब पंचायत में महिलाएँ भी बैठती थी। फैसले सामूहिक होने लगे थे कुछ साल बाद कोईरगाँवा की एक और लड़की कॉलेज जाने के लिए शहर गई। इस बार किसी ने सवाल नही किया उसकी चुप्पी उसकी कमजोरी नही, उसकी ताकत थी। बस रास्ता बताया गया। निर्मला यह सब देखकर मुस्कुरा देती थी उसे पता था कि यही उसकी असली जीत है।

निर्मला ने कभी इतिहास लिखने का दावा नही किय। उसने बस सही समय पर सही काम किया। उसकी चुप्पी उसकी कमजोरी नही उसकी ताकत थी। उसने नारी को सहानुभूति नही सम्मान दिलाया। निर्मला ने न कोई नारा लगाया, न विद्रोह किया। उसने केवल सही समय पर सही कदम उठाया। उसकी चुप्पी उसकी कमजोरी नही उसकी शक्ति थी। अतः कहा जा सकता है कि वह जो चुप रहकर इतिहास लिख गई केवल एक कहानी नही बल्कि समाज के लिए एक संदेश है। नारी का महत्व केवल त्याग में नही बल्कि उसके विचार निर्णय और नेतृत्व में है। "नारी जब आगे बढ़ती है तो वह अकेली नही चलती वह अपने साथ पीढ़ियों की दिशा बदल देती है" निर्मला ने इतिहास लिखने के दावा नही किया, पर उसकी चुप्पी आज भी कोईगाँवा की गलियों में गुंजती है।

क्योंकि कुछ, स्त्रियाँ आवाज नही उठाती वे समय खड़ा कर देती है।

अमृता कुमारी
गणित विभाग
2023-27
230158